GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

भारत की क्रांतिकारी गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका-एक विश्लेषण

Dr. Neha Paliwal
Assistant Professor ,History
Government Girls College
Jhalawar (Rajasthan)326001
Mail id- nehapaliwal57@gmail.com

भारत के सशस्त्र और भूमिगत ब्रिटिश -विरोधी क्रांतिकारी संघर्ष में पुरुषों के साथ साथ स्त्रियों की भागीदारी भी सक्रिय रूप से रही ।1857 के विद्रोह से लेकर आज़ाद हिंद फ़ौज की स्थापना तक हर चरण में महिलाओं ने अपनी भागीदारी दी ।समय के साथ महिलाओं ने नए संकल्प लेते हुए आंदोलन के प्रत्येक चरण में अपनी भूमिका को बदला और सफलता प्राप्त की।जैसे - 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में कुशल सेनानायिकाएँ, फिर विदेशों में प्रचारक, 1930 के वर्षों में भूमिगत क्रांतिकारी दलों की पूर्ण सदस्य, और 1943 तक एक महिला युद्ध-रेजिमेंट की कुशल सैनिक की भूमिका को उन्होंने बख़ूबी निभाया।क्रांतिकारी आंदोलन की गतिविधि गांधी जी के सत्याग्रह से पृथक,सशस्त्र क्रांति और गुप्त संगठन पर आधारित थी।1857-1947 तक चले इस आंदोलन में महिलाएं न केवल सन्देशवाहक और संचालन कर्ता रही बल्कि जरूरत पड़ने पर बन्दूक भी उठाई और संगठन का नेतृत्व भी किया ।उपयुक्त शोध पत्र के माध्यम से महिलाओं की स्थिति ,आंदोलन में उनकी रणनीति,स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की अहम भूमिका और हाल के वर्षों तक इतिहास लेखन में उनकी उपेक्षा कों इसके माध्यम से उजागर किया गया है

1.. 1857 का विद्रोह-महिलाये विद्रोही राज्यों में सशक्त सेनापति के रूप में-

1857-58 के विद्रोह ने भारत के क्रांतिकारी इतिहास की नीव रखी और देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत स्वाभीमानी महिलाओं को अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने का अवसर प्रदान किया।और इस अवसर पर महिला विद्रोहियों ने अपने संप्रभु अधिकार का प्रयोग किया।भारत में 1857 की

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

क्रांति की अनुगूंज में दो वीरांगनाओ का नाम प्रमुखता से लिया जाता है-लखनऊ की बेगम हजरत महल और झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई (शासन 1853-1858) :-नवंबर 1835 में बनारस में मोरोपंत ताँबे के घर जन्मी लक्ष्मीबाई का गंगाधर राव से विवाह हुआ 1855 में पति की मृत्यु के बाद उन्होंने झाँसी का शासन सँभाला तब अंग्रेजों ने उन्हें और उनके दतक पुत्र को झाँसी का शासक मानने से इंकार कर दिया तब लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों को कड़ी चुनौती देते हुए तात्या टोपे की मदद से गवालियर पर भी अधिकार कर लिया उनके लिये जनरल हुरोज़ ने कहा कि 'यहाँ वह औरत सोई हुई है जो विद्रोहियो में एक मात्र मर्द थी'। डाक्टरिन ऑफ़ लैप्स (सत्ता-हरण नीति) के तहत झाँसी के अधिग्रहण के बाद जून 1858 में ग्वालियर की लड़ाई में लड़ते हुए वीरगति पाई – इस अर्थ में वे 1857 की संभवतः एकमात्र केंद्रीय नेता थीं जिन्होंने फाँसी या देश-निकाले की बजाय युद्ध में मृत्यु को चुना ।

अवध की हजरत महल ने 1856 अवध के अधिग्रहण के बाद लखनऊ में 1857 की क्रांति का नेतृत्व किया अपने नाबालिग पुत्र बिरजिस क़ादिर को गद्दी पर बैठाकर अंग्रेज़ी हुकूमत का स्वयं मुक़ाबला किया उनमे संघठन की अभूतपूर्व क्षमता के कारण अवध के किसान,ज़मींदार,सैनिक आगे बढ़ते रहे।आलमबाग की लड़ाई के दौरान जाबाज सिपाहियों को भरपूर प्रोत्साहन देते हुए हाथी पर सवार होकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी परास्त होने पर उन्होंने अवध के ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर वहाँ लोगो में क्रांति की भावना जागृत की ।उनके विद्रोह में अवध के व्यापक ग्रामीण समर्थन, भूमिहीन किसानों सहित, शामिल था, और उन्होंने ब्रिटिशों के सभी समझौते-प्रस्ताव ठुकरा दिए; 1879 में नेपाल के निर्वासन में उनका देहांत हुआ

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

यह जोड़ी विश्लेषण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है: एक हिंदू रानी और एक मुस्लिम साधारण नारी-से-राज्य-रक्षक, दोनों ने परम सेनापति का कर्तव्य निभाया ।इनके अतिरिक्त लखनऊ की उदादेवी और आशादेवी झाँसी की झलकारी बाई और अज़ीज़नबाई ,काशीबाई और मनियारपुर की सोगरा बीबी कुछ नाम है जो 1857 की क्रांति से जुड़े हुए हैं।

2.स्वदेशी युग (1904-1911)महिलाये राष्ट्रीय राजनीति में :-

1857 की क्रांति का दौर संगठित आंदोलन का प्रचार विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार व सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की और अग्रसर हुआ । इस दौर में सबसे प्रमुख नाम है भिकाजीं रुस्तम कामा (मैडम कामा)24 सितंबर 1861 में गुजरात के नवसारी में पारसी परिवार में जन्मी ये वो क्रांतिकारी महिला थी जिन्होंने विदेश में भारतीय स्वतंत्रता की आवाज बुलंद करते हुए 22अगस्त 1907 को जर्मनी के एक शहर स्टूटगार्ट में अंतरराष्ट्रीय समाजवादी काँग्रेस के शिखर सम्मेलन में विदेशी धरती पर तिरंगा फहराया और कहा “यह भारतीय स्वतंत्रता का ध्वज हैं इसका जन्म हो चुका है हिंदुस्तान के युवा वीर सपूतों के रक्त से यह पहले ही पवित्र हो चुका है यहाँ उपस्थित सभी महानुभावों से मेरा निवेदन है की सब खड़े होकर हिंदुस्तान की आबादी के इस ध्वज की वंदना करे” और साथ ही आह्वाहन किया ‘ए भारत के कामरेड ये भारत का झंडा है इसे सलाम करो’ विदेश में रहकर उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए माहौल बनाया यूरोप में ब्रिटिश नीतियों और अत्याचार की जानकारी दी ।वे क्रांतिकारियों की प्रेरणास्रोत बनी वे न सिर्फ़ क्रांतिकारियों की आर्थिक मदद करती थी बल्कि उनके विचार और भाषण स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जोश भरते थे।उन्होंने क्रांतिकारी पत्रिका वंदे मातरम् के प्रकाशन में मदद की ।

सरला देवी चौधरानी को स्वाधीनता संग्राम में बंगाल की प्रथम महिला राजनीतिक नेता माना जाता है। 1904 से वे स्वदेशी वस्तुओं और स्वदेशी उद्यम की प्रारंभिक प्रचारकों में से थीं।1910

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

में उन्होंने इलाहाबाद में भारत स्त्री महामंडल की स्थापना की यह महिला शिक्षा को राष्ट्रीय जन-जागरण से जोड़ने वाला प्रथम स्पष्ट महिला संगठन था ।

गदर पार्टी और महिला गतिविधि:-

ग़दर पार्टी जो उत्तर अमरीका में दक्षिण एशियाई प्रवासियों के बीच गठित प्रवास-आधारित देशभक्त संगठन था ने 1915 में भारत में सशस्त्र विद्रोह की योजना बनाई। इसकी महिला सदस्यता छोटी थी ।पार्टी के महिला सदस्यों में बीबी गुलाब कौर का नाम प्रमुख है 1890 मे पंजाब में जन्मी गुलाब कौर क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी थी ।विवाह के बाद ये अपने पति के साथ मनीला (फिलीपींस)चली गई और वही ग़दर पार्टी के संपर्क में आई इस पार्टी का उद्देश्य भारत में अंग्रेजों के अत्याचार के विरुद्ध अप्रवासी भारतीयों को एकजुट करना था इन्होंने ग़दर पार्टी की प्रिंटिंग प्रेस की निगरानी रखकर पत्रकार के रूप में सदस्यों को हथियार बाटने,साहित्य वितरण और प्रेरक भाषण देने में सक्रिय रही ।ग़दर पार्टी के निर्देश पर उन्हें भारत भेजा गया यहाँ गुलाब देवी और बसंत कौर के नाम से इन्होंने कपूरथला,होशियारपुर और जालंधर में गदर पार्टी के सदस्यों को हथियार बाटने का काम किया इन्हें 2 वर्ष की सजा हुई और 1931 में इनका निधन हो गया।गुलाब कौर एक एसी महिला थीं जिन्होंने तमाम कठिनाइयों के बावजूद अपना पूरा जीवन भारत की आजादी के लिये समर्पित कर दिया ।

4. 1930 का दशक :बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियों में महिलाओं की अहम भागीदारी:-

भारत में क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में 1930 का दशक महत्वपूर्ण है।बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियों में महिलाए सक्रिय हुई।महिलाये अब अपवाद के रूप में नहीं, बल्कि भूमिगत सशस्त्र दलों (अनुशीलन समिति, युगांतर, सूर्य सेन की इंडियन रिपब्लिकन आर्मी) की नियमित सदस्य और नेतृत्वकर्ता बनकर सामने आई।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

VJ**कल्पना कीदत्त** बंगाल में सूर्यसेन के नेतृत्व में गठित स्वतंत्र स्वतंत्रता दल की सदस्य थीं ।18 अप्रैल 1930 को सूर्यसेन के दल के नेतृत्व में चटगाँव शस्त्रागार पर छापा मारा इसके बाद वो इंडियन रिपब्लिकन आर्मी चटगाँव शाखा से जुड़ गई व दल में विस्फोटक निर्माण और भूमिगत संगठन की देखरेख का काम संभाला।सितंबर 1931 में सूर्यसेन ने उन्हें प्रीतिलता वाडेकर के साथ चटगाँव के यूरोपियन क्लब पर हमले का जिम्मा सौपा गया इलाके की रेकी करते हुए इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया पर ये जमानत पर रिहा हो गई ।16 फ़रवरी 1933 को ब्रिटिश घेराव में सूर्यसेन को गिरफ़्तार कर लिया गया कल्पना उन्हें रिहा करवाने में असफल रही ।19 मई 1933 को गिरफ्तार कर आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई इस प्रकार "कल्पना दत्त ने बंगाल के क्रांतिकारियों के साथ कदम से कदम मिलाकर स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया वेश बदलकर क्रांतिकारियों को गोला बारूद पहुंचाने और निशाना साधने में प्रशिक्षित थी"

प्रीतिलता वाडेकर (1911-1932) भारतीय स्वतंत्रता की महान व निडर क्रांतिकारी जिसे "बंगाल की पहली महिला शहीद"कहा जाता है।ये चटगाँव की एक बंगाली क्रांतिकारी राष्ट्रवादी थी।1932में ये सुर्यसेन के नेतृत्व वाले क्रांतिकारी समूह में शामिल हुई इन्होंने क्षेत्र में टेलीफोन और टेलीग्राम कार्यालयों पर हमला व आरक्षित पुलिस लाइन पर कब्जा करने और क्रांतिकारियों को विस्फोटक सामग्री वितरित करने का कार्य बखूबी अदा किया।24 सितंबर 1932 में यूरोपियन क्लब पर सशस्त्र हमले में क्रांतिकारियों के समूह का नेतृत्व किया क्योंकि क्लब के बाहर से लिखा था "कुत्तो व भारतीयो का प्रवेश वर्जित है" क्लब पर हमला करने से पहले हथियारों के प्रशिक्षण के लिए कोतवाली समुद्रतट गई।क्लब पर हमला करके आग लगा दी गई इस दौरान प्रीतिलता को गोली लग गई घायल अवस्था में गिरफ्तारी से बचने के लिये इन्होंने पोटेशियम सायनाइड का सेवन कर आत्महत्या कर ली ।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

शांति घोष और सुनीति चौधरी :ये भारत के स्वतंत्रता संग्राम की क्रांतिकारी वीरांगना थी इन दोनों ने दिसंबर 1931 में भगत सिंह,सुखदेव,राजगुरु की हत्या का बदला लेने के लिये त्रिपुरा के कलेक्टर सीजीवी स्टीवेन को गोली मार दी ।उन्हें आजीवन कालेपानी की सजा दी गई।इन्हें सबसे कम उम्र की क्रांतिकारी माना जाता है ।

बीना दास कोलकाता की क्रांतिकारी तथा संगठन छत्री संघ की सदस्य थी।6 फ़रवरी 1932 को कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में बंगाल के गवर्नर जेम्स पर गोली चलाई । इन्हें गेरफ़्तार कर लिया गया रिहा होने के बाद 1939 में यह कांग्रेस में शामिल हो गई और 1986 में इनका निधन हो गया।

दुर्गा देवी: यह एक निर्भीक क्रांतिकारी महिला थी यह नौजवान सभा तथा हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की सदस्य बनी। 1928 में जॉन सांडर्स की हत्या कि बाद उन्होंने भगत सिंह को लाहौर से सुरक्षित बाहर निकालने में मदद की। भूमिगत क्रांतिकारीयो को आश्रय दिया संदेश पहुँचाये । तथा गुप्त रूप से क्रांतिकारियो को गोला बारूद भी पहुँचाए।

सुशीला दीदी: ये भी क्रांतिकारी थी तथा इन्होंने दुर्गा भाभी के साथ सहयोगी के रूप में कार्य किया ये भगत सिंह की क्रांतिकारी दीदी के नाम से प्रसिद्ध थी। यह भी हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसियेट की सदस्य रही और भगत सिंह का सहयोग किया बाद में यह तिलक के गरम दल में शामिल होकर राजनीति में सक्रिय बनी रही।

5.पूर्वोत्तर भारत में क्रांतिकारी गतिविधि: इस क्षेत्र की महिला क्रांतिकारियों में रानी गाइडिन्लियू का नाम प्रमुख है।इन्होंने नागालैंड में अंग्रेजो के शोषण के विरुद्ध क्रांतिकारी हेरका आंदोलन चलाया इसमें इन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध गोरिल्ला युद्ध प्रणाली को अपनाया।हेराका आंदोलन की नेता रानी गाइडिन्लू ने मणिपुर,नागालैंड ,असम में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व किया। ब्रिटिश आंदोलन में शामिल होने के समय इनकी आयु 13 वर्ष थी।इस

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

आंदोलन का उद्देश्य स्वशासन प्राप्त करना था।इनकी वीरता के कारण इनको नागालैंड की रानी लक्ष्मीबाई कहा जाता है साथ ही इनकी वीरता के कारण नेहरू जी ने इन्हें रानी की उपाधि दी।इन्होंने लोगो कों गांधी जी की विचारधारा से अवगत कराया तथा एकजुट किया ।इनके योगदान को सम्मान देते हुए इन्हें सरकार द्वारा पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

6.आजाद हिंद फ़ौज और महिला नेतृत्व:-सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रवादियों ने दक्षिणी पूर्वी एशिया में जापानी सहायता से औपनिवेशिक भारत को ब्रिटिश शासन से आजादी दिलाने हेतु आजाद हिंद फ़ौज का गठन किया गया और 1940 में रानी झासी रेजिमेंट (INA की विशुद्ध महिला सैन्य इकाई) का गठन किया गया तथा कैप्टन लक्ष्मी सहगल को इसका नेतृत्व सौंपा गया । यह स्वतंत्रता संघर्ष की पहली पूर्ण महिला सैनिक रेजिमेंट थी।जिसे लक्ष्मी सहगल का संगठित नेतृत्व मिला

समीक्षा:-इन क्रांतिकारी महिलाओं ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अपने कर्तव्यों का अच्छे से निर्वाह किया लेकिन इन्हें अपने स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ा एक अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ और दूसरा समाज के लैंगिक मानदंडों के ख़िलाफ़।महिला क्रांतिकारियों को गहरी जड़े जमा चुकी पितृसत्तात्मक सरंचनाओं नेतृत्व व निर्णय लेने की उनकी भूमिका व औपनिवशिक शक्ति द्वारा दमन की दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ा।क्रांतिकारी संगठनों में भी महिला क्रांतिकारियों को अपनी दक्षता साबित करनी पड़ी जैसे-प्रीतिलता वाडेकर व कल्पना दत्त को सूर्यसेन द्वारा आंतरिक मंडल में शामिल किये जाने से पहले कठोर शारीरिक व सामरिक प्रशिक्षण से गुज़रना पड़ा। औपनिवेशिक अधिकारियों ने भी क्रांतिकारी गतिविधियों में महिलाओं की क्षमता को कम करके देखा।प्रीतिलता वाडेकर,कल्पना दत्त,बीना दास,दुर्गा देवी वोहरा,रानी गाइडिन्ल्यू व कई अन्य महिलाओं के क्रांतिकारी आंदोलन में योगदान से स्पष्ट

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026

होता है कि भारत का सशस्त्र क्रांतिकारी आंदोलन केवल कुछ असाधारण महिलाओं का प्रयास नहीं था इन महिलाओं ने स्पष्ट राजनीतिक चेतना के साथ असाधारण व्यक्तिगत बलिदान देकर यह मार्ग चुना महिलाएं आंदोलन का महत्वपूर्ण अंग थी।

संदर्भ-सारणी :-

रानी लक्ष्मीबाई | 1857 | झाँसी विद्रोह का नेतृत्व; 1858 में लड़ते हुए वीरगति | Britannica

बेगम हज़रत महल | 1857 | लखनऊ से अवध विद्रोह का नेतृत्व; बिरजिस क़ादर की राज्य-रक्षक | Live History India

सरला देवी चौधरानी | 1904-11 | स्वदेशी नेतृत्व; 1910 में भारत स्त्री महामंडल की स्थापना Indian Express

भीकाजी कामा | 1907-09 | 22 अगस्त 1907, स्टुटगार्ट में स्वतंत्रता-ध्वज; पेरिस प्रचार-पत्र | Wikipedia

गुलाब कौर | 1913-15 | ग़दर आयोजक; प्रेस पर पहरा, हथियार वितरण, गुप्त कार्य | Feminism in India

शांति घोष व सुनीति चौधरी | 1931 | 14 दिसंबर 1931, कोमिला में ज़िलाधीश स्टीवंस की हत्या | Wikipedia

बीना दास | 1932 | 6 फ़रवरी 1932, राज्यपाल स्टेनली जैक्सन पर पाँच गोलियाँ | Wikipedia

कल्पना दत्त | 1931-39 | चटगाँव भूमिगत दल, विस्फोटक निर्माण; आजीवन देश-निकासी | Wikipedia

पृतिलता वाडेदार | 1932 | पहाड़तली क्लब हमले का नेतृत्व; साइनाइड से शहादत | Wikipedia

लक्ष्मी सहगल | 1943-45 | सेनानायिका, रानी झाँसी रेजिमेंट, INA | JSTOR Daily

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 5
September-October: 2026